

Christmas Puja

Date : 24th December 1991
Place : Ganapatipule
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 04
English	05 - 05
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	06 - 07

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahiri

आज का योग अति विशेष है। इस विशेष दिन को अंगार को चतुर्थी अथवा कृष्णपक्ष की चतुर्थी कहते हैं। प्रत्येक चतुर्थी को, जो कि महीने के चौथे दिन पड़ती है, को श्री गणेश का जन्मदिन मनाया जाता है। मंगलवार के दिन आयी इस चतुर्थी का विशेष महत्त्व होता है। आज यही दिन है। हम सब मंगलवार, अंगार को चतुर्थी के दिन गणपति पुल में आये हैं। आज के दिन श्री गणेश की पूजा के लिए हजारों लोग यहाँ आते हैं।

सहजयोगियों को समझना चाहिए कि जो भी कुछ घटित होता है, उसे धैर्यपूर्वक स्वीकार करना है। सबूरी के साथ। यदि आप जल्दी मचायेंगे या निराश होंगे या घबरायेंगे तो कुछ भी न हो सकेगा। सबूरी की अवस्था में आप तुरन्त समझ जाते हैं कि क्या करना है और कैसे। जल्दबाजी असहज है। श्री नाथ जी ने कहा है कि धैर्य रखिए। “सबूरी में ही परमात्मा प्राप्त होता है”। जब कोई बातचीत हो रही हो तो देखिए और प्रतीक्षा कीजिए। जब आप ऐसी अवस्था को पा लेते हैं तो परम चैतन्य सारा कार्य करने लगता है और आप अच्छी तरह जान जाते हैं

कि क्या करें।

नम्रता तथा विवेक श्री गणेश जी को विशेषताएँ हैं। ये दोनों गुण गणेश तत्व की देन हैं। सुन्दर चाल से चलने वाली स्त्री को भी गज गामिनी कहते हैं। हाथी केवल घास खाते हैं फिर भी अत्यंत शक्तिशाली होते हैं, बड़े-बड़े वजन ढांते हैं फिर भी बड़े शान्त स्वभाव के होते हैं। किसी भी चीज के लिए वे जल्दी नहीं करते। उनकी स्मरणशक्ति भी बहुत तीव्र होती है। जब भी आप की बायीं ओर दुर्बल हो जाती है तो आपकी स्मरण शक्ति धुंधला जाती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आपके अन्दर गणेश तत्व कम हो गया है। जब आप बहुत अधिक दायों ओर को झुक जाती है तो बायीं ओर का गणेश तत्व कम हो जाता है। अति कर्मों लोगों को स्मरण शक्ति भी वृद्धावस्था में समाप्त हो जाती है।

श्री गणेश की एक विशेषता है कि विवेक के साथ-साथ उनकी स्मरणशक्ति भी बहुत तीव्र है, वे सब कुछ याद रखते हैं। उन्हें सब कुछ याद रखना पड़ता है, क्योंकि सभी कर्मों के चिन्ह कुण्डलिनी पर श्री गणेश जी ही अंकित करते हैं। उनके

दायें हाथ में एक कलम है जो कि उनका अपना दाँत है और वे आपके विषय में सभी कुछ आपके कर्म, आपको समस्याएं, परमात्मा की खोज में आप कहाँ गए, आपने क्या बुराईयाँ की लिखते हैं। कुण्डलिनी जब चढ़ती है तो आपके चक्रों को सभी अशुद्धियाँ दिखाई पड़ती हैं और महसूस होती हैं तथा आप जान जाते हैं कि उस चक्र में क्या समस्या है। इस प्रकार यह पूर्णतया वैज्ञानिक है। गणेश तत्व का केवल यही गुण नहीं है कि व्यक्ति अवांघ तथा पवित्र हो, उनके बहुत से गुण हैं जैसे आपमें विवेक और बुद्धिमत्ता होनी चाहिए, आपको समझ होनी चाहिए कि क्या ठीक है और क्या गलत।

अंगारिका क्या है? श्री गणेश जलते हुए अंगारों को टंडा कर देते हैं। कुण्डलिनी भी एक ज्वाला है। इसका उत्थान धधकती ज्वाला-सम है। पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण है और ऊपर को जाने वाली कोई भी चीज पृथ्वी की ओर खिंचती है। केवल अग्नि ही गुरुत्वाकर्षण के विपरीत ऊपर को जाती है। श्री गणेश दो प्रकार से आप के अन्दर को अग्नि को शांत करते हैं। वे कुण्डलिनी को शांत करते हैं। सभी अवगुणों के बावजूद भी व्यक्ति के लिए आत्मसाक्षात्कार की प्रार्थना वे कुण्डलिनी से करते हैं। वे कुण्डलिनी के बालक हैं और आपके अन्दर वे ही शिशु हैं। इस संबंध के कारण वे कुण्डलिनी को समझा पाते हैं कि आप मेरी माँ हैं और कृपया इच्छापूर्ति में मेरी सहायता कीजिए। तब कुण्डलिनी शांत होकर सोचती है कि मेरे बच्चे की इच्छानुसार मैं ऊपर उटूँ।

एक बार देवी बहुत नाराज़ हो गईं और उन्होंने सोचा कि पूरे विश्व को समाप्त कर दूँ, उन्हें लगा कि उनके बनाए हुए लोग बेकार हैं और बहुत अपराध करते हैं। तब वे तांडव नृत्य करने लगीं। यह देखकर शिवजी को बड़ी चिन्ता हुई। उन्होंने देवी पुत्र कार्तिकेय को उनके चरणों में डाल दिया, ज्योंही उनका पैर अपने बालक पर पड़ा वे तुरन्त शांत हो गईं। इसी प्रकार श्री गणेश कुण्डलिनी को बताते हैं कि आप अपने बालक को जन्म दे रही हैं और इस समय आपको क्रुद्ध नहीं होना। यह कहकर वे कुण्डलिनी को शान्त करते हैं। कुगुरुओं के पास जाने वाले लोग भी कुण्डलिनी को बहुत कष्ट देते हैं। कुण्डलिनी श्री गणेश की शक्ति के द्वारा ही उठती है। कुण्डलिनी में जो शोले उठते हैं वे शीतल शोले हैं। यह शीतलता भी श्री गणेश जी ही प्रदान करते हैं। अतः एक प्रकार से वे आपके क्रोध को भी शांत करते हैं। क्रोध की अवस्था में हम भटक जाते हैं और हमें हमारा धर्म, हमारा कर्तव्य भी याद नहीं रहता। इस क्रोध में हम किसी को चोट पहुँचा सकते हैं या उसकी हत्या कर सकते हैं। इस समय श्री गणेश ही हमारे क्रोध को शान्त करते हैं और हमें संभालते हैं।

इसा भी श्री गणेश के समान है। उन्होंने कहा कि सबको क्षमा कर दो, जिन्होंने उन्हें कष्ट दिए, क्रूसारोपित किया उन्हें

भी ऐसा ने क्षमा कर दिया। उन्होंने कहा, "हं परमात्मा इन्हें क्षमा कर दो क्योंकि वे अपने कर्म को नहीं जानते"। जब लोग मंदिर के चढ़ाने को बंचकर व्यापार कर रहे थे तो उन्होंने कोड़ा उठाकर उन सब को पीटा। यह उनका दूसरा पक्ष है। जब कोई राक्षस या दुष्प्रकृति मनुष्य आपको परेशान करता है तो गणों के पति श्री गणेश उनका विनाश करते हैं। आपको कुछ कहना या करना नहीं पड़ता। ये गण आपके साथ हैं। जब वे आपको बचाते हैं तो आप समझते हैं कि चमत्कार हुआ। यदि ये गण आपकी रक्षा कर रहे हैं तो आप समझ लीजिए कि आप सहजयोगी हैं।

हमारे शरीर के अन्दर ये गण सदा सक्रिय हैं। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने पर जब आपका सम्पर्क परमात्मा से हो जाता है, तब ये आपकी, आपके कार्यों की, आपके बच्चों आदि को देखभाल करते हैं। आत्मसाक्षात्कार से पूर्व हमारे शरीर के अन्दर में गण प्रतिकारकों के रूप में विद्यमान होते हैं। ये हमारे मध्य हृदय में होते हैं और 12 वर्ष की आयु तक उरोस्थि में इनकी रचना होती है। जब कोई प्रकोप आप पर होता है तो उरोस्थि में कंपन होता है और तुरन्त ये गण प्रतिकारक मंडराते हुए खतरें, रोग या वायरस से युद्ध शुरू कर देते हैं। माँ के विरुद्ध जाने से आप चरित्रहीन हो जाते हैं और पिता के विरुद्ध जाने से आप आलसी और अकुशल बन जाते हैं। चरित्रहीन लोगों के चक्र बहुत दुर्बल हो जाते हैं और उन्हें ठीक करना अति कठिन होता है। उन्हें एड्स या कोई अन्य विनाशक रोग हो सकता है। अतः हमें सदैव अपना जीवन पवित्र रखना चाहिए। इसी ने भी इस पवित्रता की बात की। उन्होंने कहा "आपके पास अपवित्र आंखें नहीं होनी चाहिए"। क्योंकि उनका स्थान आज्ञा चक्र में है अतः यदि व्यक्ति की आंखें पवित्र नहीं हैं तो इस चक्र में ईसा जागरूक नहीं है। पश्चिमी देशों के लोग ईसा में विश्वास करते हैं पर उनकी आंखें अपवित्र हैं। उनकी आंखें सदा स्त्रियों या पुरुषों को देखने में लगी रहती हैं। वे स्थिर नहीं हैं। यह नकारात्मकता है।

श्री गणेश हर चक्र पर विराजित हैं। हर चक्र पर बैठे हुए वे कुलपति हैं। जब तक वे नहीं कहते कुण्डलिनी नहीं चढ़ती। उनकी दूसरी प्रवृत्ति अंगारसम है। एक शोला ही दूसरे शोले को शान्त कर सकता है। जब रावण श्री राम के विरुद्ध बोला तो पूरी लंका जल गयी क्योंकि श्री हनुमान भी मंगलवार को ही जन्में थे और श्री गणेश एवं श्री हनुमान मिलकर मानव के अन्दर के क्रोध को शान्त करने का कार्य करते हैं। वे इस प्रकार कार्य करते हैं कि व्यक्ति समझ जाता है कि उसने गलती की है। क्रोधो स्वभाव के व्यक्तियों को भी वे ठीक कर देते हैं। यदि कोई व्यक्ति मांगलिक हो अर्थात् उसका मंगल ग्रह दुर्बल हो तो उसे मूंगा पहनने के लिए कहा जाता है जो कि गर्म होता है। अग्नि से अग्नि बुझती है। गर्म देशों में रहने वाले लोग

मिर्चों का बहुत उपयोग करते हैं। पसीनों से वे ठण्डे हो जाते हैं। अपनी गर्मी से श्री गणेश आपकी गर्मी को शान्त करते हैं हमें श्री गणेश के प्रति समर्पित होना चाहिए कि वे इस गर्मी को वश में रखें।

व्यक्ति को धैर्य रखना चाहिए कि पूजा के उचित समय पर ही पूजा होगी। विधि के विधान को क्यों बदलना है? हम समय के दास नहीं हैं। यदि आप लोग समय के दास न बनें तो सहजयोग फ़ैल सकता है। इसका अनुभव तथा इस पर विश्वास होना चाहिए। सहजयोग में अन्ध विश्वास नाम का कुछ नहीं है। यह विश्वास हमने अपने चक्षु तथा बुद्धि से देखा है। यदि देख कर भी आप विश्वास नहीं करते तो अवश्य आपमें कोई दोष है। आप देख सकते हैं कि श्री गणेश कितने महान हैं और अष्ट-विनायक (आठ गणेश) के कारण महाराष्ट्र कितना पुण्यवान है।

आप अति बुद्धिमान तथा भाग्यशाली हैं कि आपने सत्य को खोजा तथा प्राप्त किया। इसे पूर्णत्व तक लाने के लिए आपको श्री गणेश के गुण आत्मसात करने चाहिए। श्री गणेश की पूजा के लिए हजारों लोग गणपति पुल आए हैं। वास्तव में कितने लोग उन पर विश्वास करते हैं? कितने लोगों में श्री गणेश के गुण हैं? वे शराब पीते हैं, स्त्रोलम्पट हैं, परस्पर झगड़ते हैं और अत्याचारी हैं फिर भी वे अंगारिका एवं श्री गणेश की पूजा करने को आ पहुंचे हैं। आपमें यदि इतनी बड़ी अग्नि है तो आप आए ही क्यों? कोई नहीं सोचता कि जिस पर वे विश्वास करते हैं उसके गुणों को भी अपनाना है। आप भिन्न गुरुओं तथा देवताओं की पूजा करते हैं, पर क्या आपने उनके गुणों को अपनाया? बिना उनके गुणों को ग्रहण किए आपका उनपर विश्वास करना व्यर्थ है।

परमात्मा आप पर कृपा करे।

ORIGINAL TRANSCRIPT

ENGLISH TALK

In short, I told them what is so special about today, tonight, is the time when, this is Tuesday, on Tuesday Shri Ganesha was born. So they celebrate every fourth day of the moon as the Shri Ganesha's birth date because He was born on the fourth. But when this fourth falls on a Tuesday then they think it's a tremendous yoga, because on Tuesday He was born. On Tuesday, this fourth of the month has come, so they just try to worship it as a something special day.

Now I also told them what is the quality of Shri Ganesha, which we see in Christ and, as Christ is the Incarnation of Shri Ganesha, today remarkable thing is that the third yoga is that today is the birthday of Christ. And the fourth thing, which is very important, is that you all should be here on such-and-such day on Ganapatipule.

So it's very important day and that's how we have to learn that if you worship Ganapati or if you worship Christ, we should try to think what qualities we have got within ourselves.

Now regarding Jesus Christ – you know Him very well – that He always talked of morality, always talked of holiness, of auspiciousness. And all these things, you see, the holiness and the complete cleanliness within your being is to such an extent that, I said, He said that, “Thou shall not have adulterous eyes.” So Shri Ganesha also was against the adultery. Any kind of adultery He was against and that's why those people who indulge into adulterous life suffer, suffer very badly. It's rather difficult to cure them. All these diseases which are incurable of Ganesha's problems are really difficult, because here you have insulted Shri Ganesha and that's why He gets angry with you.

Now, His style is of two type(s). One is by which He soothes you down, He soothes your Kundalini and the second one is where He really gets angry with you and tries to punish you. These two qualities here, so one has to be very careful when you are dealing with your morality. The morality should be a part and parcel of your being. That you should be proud that you are moral and that you should try to lead a very moral life without torturing anybody, without troubling anybody. In Sahaja Yoga, I hope it is all very clear cut that we have to lead a very, very moral life.

Of course, all My lecture can be translated later and I hope you'll be able to enjoy it. But this is the best part of it, that today we have the birthday of Christ, the birthday of Shri Ganesha and also on such a date which is so well-worshipped and regarded as something important in India.

May God bless you all!

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahiri

आताचा योग हा फार महत्त्वाचा आहे आजच्या महत्त्वाच्या दिवसाला अंगारकी चतुर्थी किंवा कृष्ण पक्षाची चतुर्थी असं म्हणतात. प्रत्येक चतुर्थी श्रीगणेशाचा जन्मदिन म्हणून साजरी केली जाते. महिन्याचा चौथ्या दिवशी चतुर्थी येते. पण जर चतुर्थी मंगळवारी आली, तर तो दिवस फार महत्त्वाचा समजला जातो. आज तोच दिवस आहे आणि आपण सारे इथे गणपती पुज्याला, मंगळवारी, अंगारकी चतुर्थीच्या दिवशी जमले आहोत. श्री गणेशांची पुजा करण्यासाठी हजारो लोक इथे येतात.

सहजयोगीयांनी हे जाणले पाहिजे की, जे कांही होत आहे, ते सोशिकतेने घेतले पाहिजे. "सबुरी". जर तुम्ही घाईगर्दी करण्याचा प्रयत्न केला किंवा हताश झाला, धावकुतीला आला, तर काहीच केलं जात नाही. सबूरी मूळे तुम्हाला ताबडतोब कळतं की, काय केलं पाहिजे आणि कशा प्रकारे केलं पाहिजे. घाई हा "असहज" मार्ग आहे, श्री साईनाथांनी सांगितलं की सोशिकता राखा, सहनशिलतेमध्ये दिव्यत्व आढळतं, सापडतं. जेव्हा एखादं संभाषण चालू असतं त्यावेळी नुसतं यांबा आणि पहा. जेव्हा तुम्ही या स्थितीला येतां त्यावेळी परमचैतन्य सर्व कांही कार्य करतं आणि तुम्ही नक्की काय करायचं आहे, ते तुम्हाला कळतं.

श्री. गणेशाचं वैशिष्ट्य म्हणजे त्यांची नम्रता आणि त्यांची विद्वत्ता हे आहे. हे दोन्ही गणेश तत्वांतून येतं. दुसरं वैशिष्ट्य म्हणजे, ते फार शांत, शीतल व्यक्ति आहेत. त्यांची चालण्याची दब सुद्धा शांत, एखाद्या हत्तीप्रमाणे आहे. अगदी सावकाश एखादी स्त्री सुरेखरित्या चालते तेव्हा तिला "गजगमिनी" असे म्हणतात. हत्ती फक्त गवत खातात पण ते खूप शक्तिमान असतात. आणि जिथे भारी वजनाचं काम असेल तिथे ते वजन हलविण्यासाठी त्यांचा वापर होतो. हत्तीदेखील खूप शांत स्वभावाचे असतात कोणत्याही गोष्टीसाठी ते धाई करीत नाहीत. त्यांची स्मरणशक्ति देखील प्रचंड असते. जेव्हा तुमची डावी बाजू कमकुवत होते, तेव्हा तुमची स्मरणशक्ति अस्पष्ट होऊ लागते, याचं कारण तुमच्या मधलं गणेशत्व कमी झालं असतं. जेव्हा तुम्ही अतिशय उजवीकडेच होता, त्यावेळी डावी बाजू कमी होत जाते. जे लोक फार जास्त काम करतात त्यांची स्मरणशक्ति उतार वयांत कमी होत जाते. श्री गणेशाविषयी वैशिष्ट्यपूर्ण गोष्टी ही की, त्यांच्या विद्वत्तेच्या जोडीने त्यांची स्मरणशक्ति देखील खूप तल्लख असते. त्यांना सर्व कांही आठवतं. त्यांना सर्व गोष्टीचं स्मरण देवावं लागतं कारण कुंडलिनीवर सर्व कर्माचा ठसा उठविण्याचं काम श्री गणेशच करतात. त्यांच्या उजव्या हातांत

लेखणी असते. ती म्हणजे त्यांचा स्वतःचा दातच आहे. आणि तुमच्याबद्दलचं सर्व कांहीते लिहीतात, तुम्ही काय केलं, तुमच्या अडचणी काय, साधक म्हणून तुम्ही कुठे गेला, काय चुका केल्या, जेव्हा कुंडलिनी उत्थान पावते त्यावेळी तुमच्या चक्रांवर कांही बाधा दिसून येतात का, तुम्हाला जाणवतात का? आणि त्या चक्राविषयी काय बरोबर नाही. या प्रकारे ते पुरेपूर शास्त्रीय आहे. गणेशतत्त्वाचा फक्त हाच गुण नाही की, व्यक्ति पवित्र आणि अबोधितेत असावी, त्यांचे अनेक गुण आहेत. जसे तुम्हाला सूझता आणि बुद्धीमत्ता असायला हवी, योग्य आणि अयोग्य तुम्हाला समजले पाहिजे.

अंगारिका म्हणजे काय? जळते निखारे श्री गणेश थंड करतात कुंडलिनीसुद्धा फक्त एक ज्वाला आहे. तिची हालचाल जळणाऱ्या आगीप्रमाणे असते. धरतीला गुरुत्वाकर्षण असते. वर जाणारे सर्व कांही जमिनीकडे खेचले जाते. फक्त अग्नि गुरुत्वाकर्षणाविरुद्ध वर खेचला जातो. तुमच्यामधील अग्निला श्रीगणेश दोन प्रकारे शांत करतात ते कुंडलिनीला शांत करतात, त्या व्यक्तिमध्ये दोष असले तरीही त्या व्यक्तिला आत्मसाक्षात्कार देण्याची ते कुंडलिनीला विनंती करतात. ते कुंडलिनीचे बालक आहेत. आणि तुमच्यामध्ये ते आहेत. ते बालक आहेत त्या नात्याने ते कुंडलिनीची समजूत घालतात की, तुम्ही माता आहात, आणि माझ्या इच्छामध्ये मला सहाय्य करा. मग ती शांत होते आणि विचार करते की, माझ्या मुलाला ते हवं आहे, तेव्हा मी उत्थान पावेन.

एकदां देवी अतिशय संतापली, सर्व जगाचा विनाश करावा असा तिने विचार केला. लोक चुकीच्या मार्गाने जाऊन अनेक पापे करीत आहेत, तेव्हा तिने निर्माण केलेल्या निर्मितीला कांहीच अर्थ नाही असं तिला वाटलं, तेव्हा ती विनाशाचे नृत्य करू लागली, हे पाहून श्री शिव फार काळजीत पडले, आणि सर्व जगाचा नाश होईल असं त्यांना वाटू लागलं. त्यामुळे त्यांनी श्री कार्तिकेय यांना, जे तिचं स्वतःचं मूल होतं, त्यांना तिच्या पायाशी ठेवलं. तशाच प्रकारे श्रीगणेश कुंडलिनीला शांत करतात. हे सांगून की, तुझ्या मुलांना तू जन्म देत आहेस, आणि अशा वेळी तू रागावलेली असतां नये. कांही लोक जे अयोग्य गुलंकडे गेले आहेत, त्यांनी सुद्धा कुंडलिनीला खूप त्रास दिला आहे. कुंडलिनीचा हा आधार देखील श्री गणेशच आहेत. कुंडलिनी फक्त त्यांच्या शक्तिनेच उत्थान पावते. कुंडलिनीतून निघणाऱ्या ज्वाला, शीतल ज्वाला असतात. तुमचा राग आणि चिडचिडही ते थंड करतात, जेव्हा आपल्याला राग येतो, तेव्हा आपण त्या तारेत वहावतो आणि आपण काय करावयाचे

आहे, हे आपल्या ध्यानांत येत नाही. त्या मनःस्थितीत आपण कोणाला तरी मारू शकतो किंवा कोणाचा खून करू शकतो. त्यावेळी श्रीगणेश त्याला काबूत आणतात. आणि तुमची मनःस्थिती थंड करतात.

ख्रिस्त देखील श्री. गणेशासारखे आहेत. सर्वांना क्षमा करा असे त्यांनी सांगितले. ज्यांनी त्यांचे हालहाल केले आणि ज्यांनी त्यांना सुळावर चढविले, त्यांना त्यांनी क्षमा केली. त्यांनी म्हटले, 'हे देवा त्यांना क्षमा कर. कारण, ते काय करित आहेत ते त्यांना माहित नाही, जेव्हा लोक परीघान करण्याच्या वस्तु आणि देवाच्या दानाचा देवाच्या नावाने व्यापार करू लागले, तेव्हा त्यांनी हातात चाबूक घेतला व त्यांना फोडून काढले ही त्यांची दुसरी बाजू होती, जेव्हा एखादा राक्षस किंवा दुष्ट प्रकृतीची व्यक्ती तुम्हाला त्रास देते, त्यावेळी, ते "गणपती" गणांचे अधिपती असल्याने ते त्यांचा नाश करतात. तुम्हाला काहीही करावे किंवा सांगावे लागत नाही. हे गण तुमच्या बरोबर असतात, जेव्हा ते तुम्हाला वाचवितात, तेव्हा तुम्हाला तो चमत्कार वाटतो, जर ते तुमचं रक्षण करित असतील. तर तुम्ही जाणून घ्या की, तुम्ही सहजयोगी आहात.

दुसरी गोष्ट म्हणजे आपल्या शरीरांत सुद्धा ते नेहमी कार्यरत असतात. जेव्हा तुम्हाला तुमचा आत्मसाक्षात्कार. मिळतो तेव्हा, तुमचं ईश्वराशी संधान जुळतं, आणि ते तुमची काळजी घेतात. तुमची नोकरी, मुलं यांचीदेखील. आत्मसाक्षात्काराआधी 'अँटिबॉडी' स्वरूपात ते आपल्यामध्ये असतात, जे रोगांपासून आपला बचाव करतात. हे मध्य हृदयामध्ये असतात आणि बाराव्या वर्षापर्यंत 'स्टर्नम' या अस्थिमधे ते तयार होतात. जेव्हा एखादे संकट आपल्यावर येतं स्टर्नम हलतं आणि ताबडतोब येऊ घातलेल्या घातुक रोग किंवा व्हायरसशी लढा देणं ते चालू करतात. जेव्हा तुम्ही श्री माताजींच्या विरोधात जाता त्यावेळी तुम्ही अनैतिक बनता. ज्यावेळी तुम्ही देवाच्या विरोधात जाता तेव्हा आळशी आणि अकार्यक्षम नालायक बनता. लोकांनी स्वतःची नितीमत्ता गमावली आहे, त्यांची चक्रे खूप कमकुवत होतात आणि दुरुस्त करण्यास कठीण अशी होतात. 'त्यांना "एडस" आणि इतर विघातक रोग होऊ शकतात आणि त्यासाठीच आपण आपले सर्व आयुष्य पवित्रतेमध्ये बुडविले पाहीजे. ख्रिस्त या पवित्रतेसंबंधी बोलले होते. तुम्ही दृष्टी निरंजन हवी, असे ते म्हणाले. कारण त्यांचे स्थान आज्ञाचक्रावर आहे. जर डोळे पवित्र नसतील, तर ख्रिस्त तिथे नसतील. पाश्चात्य लोक ख्रिस्तावर विश्वास ठेवतात, पण त्यांची दृष्टी फार वाईट असते. त्याचे डोळे सारखे भिरभिरते असतात. स्त्रियांकडे बघत किंवा स्त्रिया पुरुषांकडे बघत असतात. त्यांचे डोळे कधीच स्थिर नसतात. ही निगेटीव्हिटी आहे.

श्री गणेश प्रत्येक चक्रावर आहेत. ते प्रत्येक चक्रावर बसणारे उपकुलगुरु आहेत. त्यांनी तसे म्हटल्याशिवाय कुंडलीनी उत्थान पावत

नाही. त्यांचा दुसरा स्वभाव निखान्यासारखा आहे. अंगार" फक्त ज्योतच ज्योतीला थंड करू शकते. जेव्हा रावण श्रीरामाच्या विरुद्ध बोलला त्यावेळी पुर्ण लंका जळून गेली. कारण श्री हनुमानसुद्धा मंगळवारी जन्मले. आणि श्रीगणेश व श्री हनुमान दोघे मिळून एकत्र त्यांचं कार्य करतात. मुख्यत्वे करून मानवामधील राग काबूत आणण्याचं काम करतांना ते अशाप्रकारे कल्पित्या लढवितात की, त्या व्यक्तीला आपण चूक करतो आहे हे कळतं. उष्ण प्रकृतीच्या लोकांना सुद्धा ते ठीक करतात. जर व्यक्ती मंगळाची असेल, म्हणजे व्यक्तीचा मंगळ बरोबर नसेल, तर तशा व्यक्तीचा खडा जो देखील उष्ण असतो तो देतात. उष्ण कटिबंधातले लोक खूप गरम मिर्च्या खातात. त्यांना घाम येतो. आणि ते थंड होतात ते अशाप्रकारे तुम्हाला दर्शवितात की, तुम्हीच थंड होता. हे सर्व रोगही बरीच उष्णता निर्माण करतात, या उष्णतेने व्यक्तीचा गोंधळ होतो त्यावेळी आपण श्री गणेशाची प्रार्थना केली पाहीजे. आणि ही उष्णता काबूत आणण्यासाठी त्यांना शरण गेले पाहीजे.

जी वेळ पुजेसाठी असेल त्यावेळी पुजा चालू होईल, हे समजण्यासाठी सहनशीलता पाहीजे. जे ठरलेलं आहे ते का बदलायचं? आपण घड्याळाचे गुलाम नाही. जर तुम्ही लोक घड्याळाचे गुलाम बनला नाही तर, सहजयोग पसरू शकेल. त्यांचा अनुभव असला पाहीजे. त्यामध्ये विश्वास आपण स्वतःच्या मेंदूने आणि तुम्हास नक्कीच तुमच्यामध्ये काही चूक असते. श्री गणेश किती महान आहेत, हे तुम्ही बघता आणि या अष्टविनायकाच्यामुळेच महाराष्ट्राला इतकं सारं पुण्य मिळालं आहे.

तुम्ही खूप आशिर्वादित आणि बुद्धीवान आहात. कारण, शोधलं आणि तुम्हाला सत्य गवसलं! हे पुर्णत्वाला नेण्यासाठी श्री गणेशाचे गुण तुम्ही स्वतःमध्ये आत्मसात केले पाहीजेत. तुम्ही पहाताय, हजारोच्या संख्येने लोक गणपतीपुढ्याला श्री गणेशांची पुजा करण्यासाठी येत आहेत. त्यापैकी किती जणांचा त्यांच्यावर खरोखर विश्वास आहे? ते दारू पितात, बायका ठेवतात, एकमेकांशी भांडतात. अत्याचार करतात आणि श्री गणेशांच्या अंगारीकेसाठी आले आहेत. जर तुमच्यामध्ये एवढा मोठा अग्नी आहे, तर तुम्ही कां आला? कोणालाही असं वाटतं नाही की, ज्यावर त्यांचा विश्वास आहे त्यांचे गुण आत्मसात करावे, तुम्ही नाहीतर ज्या दैवताची अथवा गुरुची प्रार्थना करता, पण त्याचे गुण तुम्ही आत्मसात करता कां? जोपर्यंत ते गुण तुम्ही आत्मसात करित नाही. तोपर्यंत तुमचा त्यांच्यावरचा विश्वास हा असून नसल्यासारखा आहे.

"ईश्वर तुम्हाला आशिर्वाद देवो".